श्री रणवीर
संस्कृत-अनुसन्धान-विभाग
जम्मू

के

संस्कृत महापुस्तकालय का संक्षिप्त

परिचय-पत्र

(द्वितीयावृत्ति)

(मुद्रक :—चांद प्रेस, जम्मू)

(हिन्दी)

श्री रणवीर संस्कृत-अनुसन्धान विभाग जम्मू

के

संस्कृत महापुस्तकालय का

संक्षिप्त परिचय-पत्र

(द्वितीयावृत्ति)

१ पूर्वस्थापना :-

महाराजा गुलाबसिंह एक परम बुद्धिमान्, नीतिज्ञ और वीर शासक थे जिन्होंने छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त डुग्गर को एक सूत्र में बांधा और अपने बाहुबल से अनेक क्रूर शासकों को पराजित करके इस राज्य की सीमा काबुल, रूस और चीन के साथ मिला दी, तथा क्रूर शासकों से त्रस्त एवं शोषित प्रजा को निर्भय तथा समृद्ध बनाया। उन्ही के सुपुत्र श्री रणवीरसिंह जी ने सन् १८५७ में जब राज्य का भार संभाला तो उन्होंने प्रजा की आध्यात्मिक, साहित्यक, राजनैतिक और आर्थिक उन्नति के लिए तथा पारस्परिक बन्धुत्व और सुख-शान्ति के प्रसार के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये। वे अपने इस राज्य में राम-राज्य का आदर्श स्थिर करना चाहते थे। इन्हीं धार्मिक प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर उन्होंने अपने राज्याभिषेक के थोड़े ही दिनों बाद श्री रघुनाथमन्दिर जम्मू की स्थापना की। इस मन्दिर में भगवान् राम की प्रधानता में आर्य-धर्मानुसार उपाधि भेद से एक ही ईश्वर के अन्यान्य अनेकरूप देवताओं की स्थापना की। धर्म का प्रचार विद्या से ही हो सकता है, इसलिए धर्म और विद्यानुरागियों के लिए इस मन्दिर के साथ ही एक संस्कृतमहाविद्यालय और इस संस्कृतमहा-पुस्तकालय की भी स्थपना की।

२ प्रसार योजना

श्री रघुनाथ मन्दिर, संस्कृतमहाविद्यालय और संस्कृतमहापुस्तकालय ये तीनों महाराजा बहादुर श्री रणवीरसिंह जी की धार्मिकता और वंश परम्परागत भारतीय विद्यानुरागिता के प्रतीक हैं। थोड़े ही दिनों में यह मन्दिर डुग्गर के लिए ही नहीं अपितु समस्त भारत के लिए एक महातीर्थ बन गया।

स्थान-स्थान से अमुद्रित पुस्तकें लाने के लिए पर्य्याप्त व्यय किया जाने लगा और विभिन्न प्रदेशों से पुस्तकें लाने के लिए विद्वानों को प्रोत्साहित किया गया और उनको भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भेजा जाने लगा। इस कार्य के लिए पं० श्री गोकुलचन्द्र जी, जयपुर निवासी दुर्गादास के पिता पं० ब्रजलाल जी, बङ्ग निवासी रसमोहन महाचार्य जी, पं० दिलाराम जी वैद्य, ज्योतिर्वित् पं० भास्कराचार्य्य जी नियुक्त किये गये। इनके अतिरिक्त अमुद्रित पुस्तकें लाने के लिए विद्वानों को भिन्न-भिन्न स्थानों में भेजा गया। महाराज बहादुर के आदेशानुसार पं० आशानन्द जी बनारस से बहुत सी अमुद्रित पुस्तकें प्रचुर मूल्य से लाये थे।

३ संग्रह-कार्य

डाक्टर स्टाइन ने लिखा है कि डाक्टर फिटनस एड् वर्ड हाल ने पं० वैद्यनाथ घाटम के पुस्तकालय की जिन ६६ पुस्तकों का अध्ययन किया था, उनमें से भी ६४ पुस्तकें खरीद कर इस पुस्तकालय में लाई गई थीं। इस विषय में विशेष अनुसन्धान करने के लिए और भी बहुत से विद्वान् देश-देशांतरों से बुलाये गये। कुछ विद्वानों ने अस्थायी रूप से काम किया और बहुत से महाराज बहादुर के आदेशानुसार यहां वैतनिक नौकर हो गये। पटियाला निवासी पं० व्यास जी महाराज के आश्रित विद्वान् थे, सन् १८६६ में चल बसे। उनकी संगृहीत अमुद्रित पुस्तकें उनकी विधवा धर्मपत्नी को पुष्कल धन देकर खरीदी गईं। इसी तरह पुरमण्डल के पं० गोपालराम जी और जम्मू के पं० रामकृष्ण जी से भी बहुत सी पुस्तकें खरीदी गईं और जो विद्वान पुस्तकालय को देखने के लिए आते थे, उनको भी महाराज बहादुर अमुद्रित पुस्तकें लाने के लिए प्रोत्साहित करते थे और पुस्तकें लाने वालों को उचितोचित मूल्य के अतिरिक्त पुष्कल पुरस्कार भी दिया जाता था। स्टाइन कैटलाग के अनुसार नं० ३१६० शालिहोत्र (अश्व चिकित्सा) नं० ३२१५-१८ हस्त्यायुर्वेद, नं० ६३० तर्क कुतूहलम् इन पुस्तकों को गोपाल दक्षिणनगर जयपुर से लाये थे. कूर्माचल निवासी पं० दुर्गादत्त जी "सिद्धांत सुधानिधि" को जयपुर से लाये थे।

४ काश्मीर में लिपि-कार्य :-

इसके अतिरिक्त जिन पुस्तकों को मालिक बेचना नहीं चाहते थे, उनको लेखकों द्वारा लिखवा कर पुस्तकालय में रखा गया। काश्मीर संस्कृत साहित्य की जन्म-भूमि है। वैदेशिकों द्वारा संस्कृत साहित्य के ध्वंस किये जाने पर भी अभी तक उसके अनन्त अवशेष अवशिष्ट हैं। इस विचार से महाराज बहादुर

ने सन् १८६६ में काश्मीर में भी अमुद्रित पुस्तकों का संग्रह करने का विचार किया। पं० वीरबल भद्र के सुपुत्र पं० राज काक ने इस कार्य में अधिकाधिक भाग लिया। उसने कुछ ऐसी पुस्तकों का संग्रह किया जो भारत भर में दुष्प्राप्य थीं। शारदा लिपी में लिखी हुई बहुत-सी पुस्तकों का उल्था पं० राजकाक की अध्यक्षता में पं० बलभद्रकाक, पं० साहिबराम, पं० कृष्ण एवं और भी कई विद्वानों ने देवनागरी में किया। इनमें १२ पुस्तकें भूर्ज-पत्र पर लिखी थीं, दर्शनार्ह होने के कारण वे ज्यों की त्यों ही पुस्तकालय में रख दी गईं। इतने बड़े शाही पुस्तकालय में उनका इस रूप में होना भी एक विशेष महत्व रखता है। पं राजकाक के देहावसान हो जाने के बाद यह कार्य जम्मू निवासी पं० जगद्धर जी के हाथ दिया गया। उनके साथ तीन और भी पण्डित थे, पं० सुखराम, पं० आशानन्द प० ज्योतिर्विद् दयाराम। उनके द्वारा पं० जगद्धर जी ने बहुत-सा दुर्लभ पुस्तकों का उल्था करवाया।

५ काशी में अन्वेषण :-

इसी कार्य के लिए बहुत से पण्डित और विद्यार्थी भी बनारस भेजे गए जो वहां से नकल करके बहुत सी पुस्तकें लाये थे। उस समय इन सब के पृथक्-पृथक् बण्डल बना दिये गये और मुद्रित पुस्तकें भी इनके साथ ही रक्खी गई थीं।

६ अलवर से संग्रह

सन् १८८३ में जब अलवर नरेश सवाई श्री मङ्गलसिंह जी जम्मू में आए तो महाराजा बहादुर से उन्होंने कहा कि आप पुस्तक संग्रह पर इतना व्यय क्यों कर रहे हैं महाराज रणवीरसिंह ने उत्तर दिया कि वेश्याओं के नृत्य, द्यूत, सुरापान और व्यर्थ के ऐश-आराम पर व्यय की अपेक्षा मैं उस व्यय को श्रेष्ठ समझता हूँ जिससे जनता की धार्मिक प्रवृत्तियों का विकास होता है। महाराज रणवीरसिंह जी के व्यंग्य-पूर्ण ये शब्द अलवर नरेश सवाई श्री मंगलसिंह जी के हृदय में काफी घर कर गए और उन्होंने महाराजा के इस पुण्यकृत्य से प्रभावित होकर अपना सम्पूर्ण अमुद्रित पुस्तकालय उनकी भेंट कर दिया।

७ जम्मू-काश्मीर में सम्पादन कार्य :-

महाराजा बहादुर श्री रणवीर सिंह जी ने १०० से भी अधिक विद्वानों को वैतनिक भृति पर नियुक्त करके जिन पुस्तकों का संग्रह करवाया और नई पुस्तकों का सम्पादन करवाया वे देश भर के लिए उपयुक्त और आवश्यक हैं। इसके साथ ही महाराज बहादुर ने उर्दू, फारसी और अरबी की पुस्तकों का

भी अनुवाद करवाया जिसमें बड़े-बड़े आलिम फाज़िल मौलवियों ने सहयोग दिया। महाराज बहादुर अपनी हिन्दू-मुस्लिम प्रजा को अपनी दो आंखें समझते थे। लगभग ३८ पुस्तकों का उल्था किया गया। इसी तरह नया सम्पादन भी हुआ। नव्य चण्डीदास ने "रघुनाथ गुणोदय" और "धर्म संक्षिप्तान्हिका" लिखी। साहिबराम ने "नीति कल्पलता" शिवशंकर ने "रणवीर रत्नाकर वासुदेव ने वेदान्त सम्बन्धी "चित्ता प्रतिभा", गणेश शास्त्री ने आयुद सम्बन्धी "विषहरतन्त्र," लल्ल पण्डित ने "प्रश्न रत्नावली," श्रीनगर के रामचन्द्र ने "मत्स्यपुराण" की टीका अहल्लक मुंशी ने तीनों का उल्था देवनागरी में करवाया और साहिब्राम ने उसकी टीका हिन्दी में की इसी तरह साहिब्राम ने "वीर वैद्य रत्नाकर" का देवनागरी में उल्था करके उसकी टीका हिंदी में की। इस तुस्तकालय के अमुद्रित पुस्तकों के संग्रह में कुछ ऐसी पुस्तकें भी हैं जिनके कर्ता का कोई संकेत नहीं मिलता। नं० २८३६ मुहूर्त खण्ड (ताजिक संहिता) का अनुवाद तैलङ्ग के वेङ्कट शास्त्री, श्रीनगर के पं० दामोदर, पं० गोविन्द कौल, पं० महादिम्ब, पं० ईश्वर कौल, बनारस के देवकृष्ण ज्योतिर्विद् और जम्मू के गोविन्दाचार्य और गङ्गाराम ने किया।

८ केटेलाग निर्माण–

इस पुस्तकालय का कैटलाग सन् १८८८ में डा एम. ए. स्टाइन साहेब ने सम्पादित किया था। उनके साथ भारीमात्रा में भारतीय विद्वानों ने कार्य्य किया जिन का निर्देश उन्होंने कैटलाग की भूमिका में स्वयं किया है।

९ पूर्वस्थान–

पहले यह पुस्तकालय स्वर्गवासी महाराज श्री रणवीर सिंह जी की समाधि की बाईं ओर एक विशाल हाल में था, सभी मुद्रित पुस्तकें उसी हाल में सुरक्षित थीं परन्तु अमुद्रित पुस्तकें उससे अधिक सुरक्षित स्थान भगवान् श्री रामचन्द्र जी के मन्दिर के बगल के कमरों में रक्खी हुई थीं।

१० परिवर्तन–

वर्तमान महाराज बहादुर श्री कर्णसिंह जी भी अपने पूर्वजो की तरह, बल्कि उनसे भी बढ़कर संस्कृत विद्या और भारतीय संस्कृति से प्रेम रखते हैं। इन्होंने हाल ही में पुस्तकालय के नये भवन का निर्माण करवा कर सब पुस्तकों को इसी में रखने का आदेश दिया और इसके साथ ही "श्री रणबीर संस्कृत अनुसन्धान बिभाग" का भी उद्घाटन किया।

११. सुधार कार्य्य–

उक्त महाराज बहादुर पुस्तकालय के सुधार के लिए अधिकाधिक प्रयत्न कर रहे हैं। नई लोहे की अलमारियां मंगवाई गई हैं।

सभी अमुद्रित पुस्तकों के पृथक् पृथक् आवरण (कवर) बनवाये गये हैं और अभी तक बनवाये जा रहे हैं, जिन के लिए दो कारीगर नियुक्त किये गये हैं। नया कैटलाग बनाने के लिए पूना से 'डा० श्री एम एम. पाटकर जी' को बुलवाया गया था। डाक्टर साहिब ने स्वयं और उनके साथ दूसरे विद्वानों ने भी पुस्तक सञ्चिकाओं के निर्माण में भारी कार्य्य किया है।

१२ नया प्रोत्साहन–

वर्तमान महाराज बहादुर प्रतिवर्ष ३५० रुपये पुरस्कार देकर प्रतियोगिता निबन्ध लिखवा रहे हैं जिनमें सबसे मुख्य निबन्ध का पुरस्कार २०० रु० है, दूसरे का १०० रु० और तीसरे का ५० रु० है। यह तीसरा पुरस्कार अठारह वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी को दिया जाता है।

१३ स्वाध्याय कार्य्य–

इस पुस्तकालय से भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त बहुत से विदेशीय विद्वान भी समय २ पर लाभ उठा रहे हैं, जिन में डाक्टर बुलनर, डाक्टर पीटरसन, डाक्टर भाण्डाकर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। रिसर्च विभाग काश्मीर ने भी शैव शास्त्र के प्रकाशन में इस पुस्तकालय से काफी सहायता ली है। डा० श्री विष्णु दत्त शास्त्री जी और प्रोफेस्सर श्री वेद कुमारी घई ने पी० एच० डी० के लिए इस पुस्तकालय से पर्य्याप्त सहायता प्राप्त की है। प्रोफेसर सरला खोसला एम. ए. और केरल प्रान्त निवासी श्री वी० मेनन एम. ए. यहां से सहायता प्राप्त कर रहे हैं।

१४ इस विभाग के कर्मचारी

१ डायरेक्टर (अवैतनिक)
२ अनुसन्धाता (वैतनिक)
३ लाब्रेरियन ,,
४ नये सूचीपत्र तय्यार करने के लिये संस्कृत के दो विद्वान और नियुक्त किये गये हैं जो स्थिर रूप से नहीं हैं।

१५ पुस्तकालय की पुस्तकों का विवरण-

(क) अमुद्रित (विषय क्रम से)

१	वेद (संहिता ब्रह्मणादि)	२०२
२	सूत्र पद्धति परिशिष्टादि	२२१
३	उपनिषत्	४२१
४	वेदाङ्ग	२६
५	व्याकरण	२७६
६	कोश	७०
७	छन्दःशास्त्र	२७
८	संगीतशास्त्र	३५
९	अलङ्कारशास्त्र	१०६
१०	काव्य	२६३
११	नाटक	१४
१२	आख्यायिका कथादि	३१
१३	धर्मशास्त्र	७१८
१४	पूर्वमीमांसा	१५८
१५	वेदांत	४०४
१६	सांख्य शास्त्र	१५
१७	योगशास्त्र	२६
१८	न्याय वैशेषिक	४३५
१९	ज्योतिषशिल्पादि	५१०
२०	चिकित्साशास्त्र	२४१
२१	महाभारत रामायणादि	७९
२२	पुराणमहात्म्यादि	३०९
२३	भक्तिशास्त्र	३१३
२४	तन्त्रशास्त्र	१०३१
२५	जैनशास्त्र	३५
२६	तामिललिपिग्रन्थ	६८
२७	शारदालिपिग्रन्थ (भूर्जपत्र)	२९

(ख) मुद्रित

उक्त विषयों की मुद्रित पुस्तकें लगभग ३००० हैं।

१६ स्वर्गीय महाराज श्री रणवीरसिंह जी के तत्त्वावधान में सम्पादित अनुवादित और संग्रहीत कुछ हिन्दी संस्कृत पुस्तकों के नाम—

(क) अमुद्रित

१	अथर्ववेद संहिता पैप्पलाद शाखीया	नं० २२७५
२	रामपूर्वोत्तर तापनीयोपनिषत टीका हिन्दी-भाषानुवाद संहिता	,, ४०१८
३	सारस्वतप्रक्रिया हिंदी भाषानुवाद संहिता	,, ३४७३
४	अमरकोश हिंदीभाषानुवाद संहिता	,, ३४८४
५	अमरकोश नाम माला हिंदीभाषा लद्दाखी-भाषानुवाद संहिता	,, ३४२४
६	नानार्थ कोश	,, ३४७८
७	नाम बिभाग माला	नं० ३४७१
८	पंचसायक लक्ष्यवेदनाख्य विवरण सहित	,, ६४०
९	रघुनाथ गुणोदय	,, ६२६
१०	रघुनाथ गुणोदय	,, ६२७
११	रघुवंश संस्कृतान्वय हिंदीभाषा टीका सहित	,, ३४८१
१२	धर्मशास्त्र संग्रह	,, ३९४९
१३	नीतिकल्पलता टीका सहित	,, ४०३५
१४	नीतिकल्पलता टीका सहित	,, ४०३६
१५	पूजा रहस्य व्याख्या सहित	,, ४७४३
१६	वीर रत्न शेखर शिखा	,, ४५५
१७	वीर रत्न शेखर शिखा	,, ४५६
१८	वीर रत्न शेखर शिखा	,, ४५७
१९	वीर रत्न शेखर शिखा प्रथम श्लोक व्याख्या गहनार्थ प्रकाशिका	,, ४५८
२०	वीर रत्न शेखर शिखा	,, ४९०
२१	संक्षिप्तौहिक पद्धतिः	,, २६८९
२२	संक्षिप्तौहिक पद्धतिः	,, २६९०
२३	स्त्रीधर्म निर्णय	,, ३४७६
२४	स्त्रीधर्म निर्णय वङ्गदेश भाषाटीका सहित	,, ३४७७
२५	चित्त प्रदीप वृत्ति सहित	,, १९७७
२६	ब्रह्मसूत्र वृत्तिसार	नं० २१९६–२०००

२७	तर्कसंग्रहसिद्धांत चन्द्रोदयाख्य हिन्दी टीका सहित	नं० ४०२१
२८	जातक गणित स्कन्ध संग्रह	,, २८३८
२९	जातक फल	,, २८३९
३०	जातक संग्रह	,, २८३७
३१	ताजिक संग्रह	,, २८३४
३२	प्रश्न रत्नावली	,, २८३५
३३	मूहूर्त खण्ड	,, २८३२
३४	सिद्धांत शिरोमणि हिन्दीभाषानुवाद वार्तिक सहित	३०३६
३५	इख् तोया रातम्	,, ३१२४
३६	एकाक्षर निघण्टु	,, ३२०२
३७	कल्प सागर	,, ३३०८
३८	भाव प्रकाश श्री रणवीरसिंह देवालोकन सद्वैत सिद्धांतरत्नाकर टीका सहित	,, ३१०२
३९	वीरवैध रत्नहार टीकावीर हार लतिका	,, ३२१०
४०	वीरवैध रत्नहार टीकावीर हार लतिका	,, ३२११
४१	वीरवैध रत्नहार टीकावीर हार लतिका	,, ३२१२
४२	सार संग्रह	,, ३४७४
४३	भगवद्गीता २० टीका सहित	२७११—२७२८
४४	मत्स्यपुराण टीका भाव सहित	,, ३९२०
४५	मार्कण्डेय पुराण व्याख्यान भाव दीपक	,, ३९१९
४६	लिंगपुराण टीका भावार्थ संकेत	,, ३९२१
४७	वामन पुराण व्याख्यान	,, ४०१२
४८	रणवीर विजय	६९९ (क)
४९	,, ,,	७८८ ,,
५०	रणवीरसिंह सदाचार रत्नाकर	१९६ (ख)
५१	रणवीर संगीत महोदधि	१८८१ (क)
५२	,, ,, ,,	१८८० ,,
५३	,, ,, ,,	१८८४ ,,
५४	,, ,, ,,	१८८६ ,,

इस ग्रन्थावली को प्रकाशित करने का विचार किया जा रहा है।

(ख) मुद्रित

१	रणवीर प्रायश्चित्त प्रकरणम्	नं० ५३२ (क)
२	रणवीर प्रायश्चित्त प्रकरणम्	५३३ ,,
३	रणवीर ज्योतिर्महानिबन्ध	७३६ ,,
४	रणवीरव्रत रत्नाकर	२६५ (ख)
५	रणवीर चिकित्सा प्रकाश	८८४ (क)
६	रणवीर चिकित्सा डोगरी लिपि	८४२ ,,

इनके अतिरिक्त श्रीमद्भागवत, श्रीहर्ष चरित, दानमाला, नवग्रहशांति, रणवीरदण्ड विधि इत्यादि अनेक पुस्तकें उनके द्वारा प्रकाशित करवाई गई हैं। जिनको यत्नपूर्वक संग्रहीत कर इस पुस्तकालय में रखना उचित समझा गया हो।

१७ इस पुस्तकालय की विशेष दर्शनीय कुछ पुस्तकें जो कला के उत्कृष्ट नमूने हैं :-

१	रामायण संग्रह (वृहदाकार)	७८६ (ख)
२	श्रीमद्भगवद्गीता २० टीकायें	२६११—२७२८ (घ)
३	,, (सचित्र)	१८२३ (क)
४	,, ,,	८४२ ,,
५	(क) रप् चल नम् यर नोन् पेजूस् पा (लदाखी भाषा) पराक्रम विक्रम परिपृच्छा (वृहत्कार)	
	(ख) तोक् जुंस् (लदाखी भाषा) मुकुटधारणम्	१८५ (ख)
६	पुरुषोत्तम महात्म्य (तालपत्र)	६५८ (घ)
७	भूर्ज ग्रन्थावली (शारदा लिपि)	१–२० भूर्ज
८	रागावली (सचित्र फारसी लिपि)	१८५६ (क)
९	,, ,, ,,	१८६० (ब)
१०	गीता पंचरत्न (सचित्र)	७६३ (ख)
११	महाभाष्य	१८१ (घ)
१२	,,	१८२ ,,
१३	,,	१८३ ,,

१८ धर्मार्थ कौंसल का संक्षिप्त परिचय :-

वर्तमान महाराज श्री कर्णसिंह जी मधुर भाषी लोकरंजक, विद्या-व्यसनी राजनीति विशारद एवं दानशील और सहिष्णु तथा परम आस्तिक

हैं। धर्मार्थ विभाग की लक्ष्य-पूर्ति में आप विशेष योग दे रहे हैं और इस लक्ष्य-सिद्धि के लिए ही संस्कृत साहित्य और शास्त्रों के भण्डार इस पुस्तकालय का भी विशेष सुधार कर रहे हैं।

भूतपूर्व महाराजाओं ने धर्मार्थ विभाग की एक कौंसल बना रक्खी है जिसके सदस्य प्रतिवर्ष निर्वाचित किए जाते हैं। इस समय धर्मार्थ कौंसल के प्रधान ब्रिगेडियर श्री घनसारसिंह जी हैं ये स्वर्गवासी महाराज बहादुर श्री हरिसिंह जी के समय से धर्मार्थ विभाग की निश्शुल्क सेवा कर रहे हैं। इनकी निर्लेपता कर्मशूरता और धर्मप्रियता कौंसल के लिए एक बरदान है। इनके सहयोगी कौंसल मेम्बर कर्नल श्री भगवान् सिह जी रिटायर्ड, पं० श्री संसारचन्द जी असिस्टैण्ट कमिश्नर रिटायर्ड (महकमा इन्कम-टैक्स), श्री निरंजन दास जी सूरी रिटायर्ड प्रिंसिपल, पं० श्री रघुनाथ जी मट्टू रिटायर्ड कमिश्नर (महकमा माल) ये विद्वान भी तन-मन से अपने बहुमूल्य विचारों द्वारा धर्मार्थ विभाग की सेवा कर रहे हैं।

अनुसन्धाता (रिसर्चस्कालर)
काकाराम शास्त्री

—